हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G, II Sem

विषय — हिन्दी कहानी के उदय का शेष भाग—

प्रेमचन्द - काल हिन्दी कहानी के दो दशक की सीमा रेखा पूरी करता है। पंच-परमेश्वर, कफन तक की उनकी कथाधारा में दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ मिलती हैं। प्रारम्भिक कहानियाँ सुधारवादी प्रवृत्ति से सम्पन्न हैं और परवर्ती कहानियों में जीवन की विसंगतियों का निरूपण है। यह कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द का प्रारम्भिक कहानीकार आदर्शवादी था, पर परवर्ती कहानियों में आकर वह यथार्थवादी हो गया है।

पंडित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने यद्यपि तीन ही कहानियाँ लिखीं, तथापि उनमें चरित्र तथा अनुभूति का इतना सुन्दर समावेश है कि वह हिन्दी कथा साहित्य के लिए एक गर्व का विषय बन गया है। 'उसने कहा था' कहानी तो आज भी सर्वश्रे कहानियों में गिनी जाती है। विश्वम्भरनाथ श 'कौशिक' तथा सुदर्शन ने कथा-साहित्य के

पर्याप्त सेवा है। कौशिक जी प्रायः पारिवारिक-समस्याओं को लेकर ही रचना किया करते थे। पंडित सुदर्शन की शैली व्यंग्यमयी तथा भाषा चुस्त है।

इस उत्थान के कुछ समय तक प्रायः जासूसी और तिलस्मी कहानियाँ लिखी गयीं। रोचकता, कौतूहल, विस्मय तथा असम्भव बातें ही कहानियों का विषय होती थीं। गोपालराम गहमरी तथा खत्री जी इस कोटि के प्रमुख लेखक रहे हैं।

प्रेमचन्द के कथा-क्षेत्र से बाहर कदम रखते ही हिन्दी-कहानी का तृतीय उत्थान प्रारम्भ होता है। कुछ लेखकों ने प्रेमचन्द से प्रभावित होकर अपनी मौलिक प्रतिभा के द्वारा कहानियाँ लिखनी प्रारम्भ कीं। श्री विनोदशंकर व्यास, मोहनलाल महतो 'वियोगी', गोविन्दवल्लभ पंत, सियाराम शरण गुप्त और चन्द्रगुप्त विद्यालंकार इस समय के प्रमुख लेखक हैं। तृतीय उत्थान में शैली, भाव और भाषा में युगान्तर पैदा करनेवालों में जैनेन्द्र जी का नाम सर्वप्रथम आता है। जैनेन्द्र जी के बाद हिन्दी-लेखकों की बाढ़ सी आ गई। भगवती प्रसाद वाजपेयी, उपेन्द्रनाथ अश्क, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी और अमृतलाल नागर

विषय रहे। निष्कर्ष की दृष्टि से आज की कहानियाँ लम्बी नहीं लिखी जाती। शहरों और गाँवों की बिखरती हुई जिन्दगी में जो संक्रमण हो रहा है, इस यथार्थ का अहसास भी नयी कहानियों से प्रारम्भ होता है। अतः आज की कहानी का यथार्थबोध कोई स्थापित कमिटमेंट से जुड़ा हुआ नहीं है, न मानवतावाद के प्रति, न मार्क्सवाद के प्रति और न ही अस्तित्ववाद के प्रति। वह अलग-अलग स्तरों पर, भिन्न-भिन्न स्थितियों में, छोटे-छोटे संदर्भों में आदमी के टूटने और न टूटने के बीच के क्षणों में, भीतर और बाहर के तनावों और विघटन में, मूल्यों के संक्रमण में, परम्परा के जड़ीभूत होने में और एक गहरे मोह भंग की स्थिति में अभिव्यक्त हुआ है। इस प्रकार हिन्दी-कहानी विस्तृत क्षेत्र से बढ़ती हुई अपने उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर है।

NOTES

आदि इस युग के प्रमुख लेखक हैं।

इस युग की नारी लेखिकाओं में सुभद्राकुमारी चौहान की कहानियाँ सामाजिक-पारिवारिक जीवन के व्यावहारिक चित्रण के लिए विशेष प्रसिद्ध हैं। 'बिखरे मोती' और 'उन्मादिनी' में संग्रहित कहानियों में उन्होंने अधिकतर भारतीय नारी की परिस्थितियों, समस्याओं तथा भावनाओं का सजग चित्रण हुआ है। उषादेवी मित्रा की भावुकता भरी कल्पनामयी सामाजिक कहानियाँ भी तत्कालीन पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थी।

इसके अतिरिक्त आज कितने ही लेखक उत्तम श्रेणी की कहानियाँ लिख रहे हैं। आज के उदीयमान लेखकों में विष्णु प्रभाकर, राजेन्द्र यादव तथा मोहन राकेश का नाम उल्लेखनीय है।

आज हिन्दी-साहित्य में कहानियों का बाहुल्य है। आधुनिक युग की कहानी केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं है, अपितु मानव-समाज की गहनतम समस्याओं को भी चित्रित करती है। सामाजिक धार्मिक तथा राजनीतिक — सभी प्रकार की समस्याएँ तथा अन्तर्द्वन्द्व आज की कहानी क-